6 अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी

उन्मुखीकरण

पशु-पक्षियों की भी भाषा होती है। इसका मतलब वे एक-दूसरे का आशय बखूबी समझ लेते हैं। यह बात तो है कि पशु-पक्षियों की मनुष्यों जैसी सुविकसित भाषा नहीं होती, पर वे सीधी-सादी आवाज़ों और क्रियाओं से अपने भाव व्यक्त कर सकते हैं। ये बड़ी आसानी से खुशी, भय, चेतावनी, आमंत्रण जैसी कई भावनाएँ दर्शा सकते हैं। किसी पक्षी द्वारा किये गये संकेत अन्य पक्षी भी पहचान सकते हैं।

प्रश्न

1. आवाज़ का पर्याय क्या है?
2. किसी प्राणी की अनोखी विशेषता बताइए।
3. इस गद्यांश के लिए उचित शीर्षक दीजिए।

उद्देश्य

पत्र-लेखन की पद्धति का विकास करना। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का महत्व बताना।

विधा विशेष

पत्र विधा पाठ में प्रेषक अपने विषय से जुड़ा पत्र पावक (पत्र पाने वाला) के नाम लिखता है। पत्रों के द्वारा अपने विचार दूसरों तक पहुँचा सकते हैं।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए। शब्द का अर्थ समझ में न आए तो उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हों तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

SCERT TELANGANA

विषय प्रवेश : *हिंदी एक ऐसी भाषा है जो भारतीयों की साँसों में बसी है। यह सबकी संस्कृति, सभ्यता व गरिमा का प्रतीक है। गाँधी जी ने अपना जीवन देश की स्वतंत्रता के साथ-साथ हिंदी की सेवा में समर्पित कर दिया था। अब हिंदी न केवल भारत की बल्कि विश्व की भाषा बन चुकी है। संसार के विविध क्षेत्रों में हिंदी करोड़ों लोगों की जीविका बन चुकी है।*

हैदराबाद,
8-9-2014.

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो? आशा करता हूँ कि तुम अपने परिवार के साथ सकुशल हो। यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि तुम हिंदी से जुड़े विविध कार्यक्रमों में भाग ले रहे हो।

तुमने अपने पत्र में जानना चाहा कि हिंदी भाषा का अपने जीवन में क्या महत्व है? मैं तुम्हारी जिज्ञासा का नीचे समाधान दे रहा हूँ।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में देश को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए एक भाषा की आवश्यकता हुई। यह काम हिंदी से ही साध्य हो सका। आज हमें एक से अधिक भाषाएँ सीखना ज़रूरी है जिनमें हिंदी और अंग्रेज़ी का स्थान महत्वपूर्ण है। हिंदी से हम सारे भारत की पहचान अच्छी तरह से कर सकते हैं। भारत के अलग-अलग प्रांतों में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं। हमें भारत के सभी प्रांतों से जुड़ने के लिए एक भाषा की आवश्यकता होती है जिसे सारे भारत के वासी जानते हैं। वैसी भाषा ही हिंदी है, जो सारे भारतीयों को एकता के सूत्र में बाँधती है। हिंदी अपने शाब्दिक अर्थ से भी भारतीय कहलाती है। इसलिए देश के वर्तमान और भविष्य को ध्यान में रखकर भारतीय संविधान ने अनुच्छेद 343 (1) के तहत हिंदी को 14 सितंबर, 1949 को राजभाषा के रूप में गौरवान्वित किया है। तब से हम हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाते हैं।

आज भारत के अलावा बंग्लादेश, नेपाल, म्यांमार, भूटान, फिज़ी, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिडाड एवं टुबेगो, दक्षिण अफ्रिका, बहरीन, कुवैत, ओमान, कत्तर, सौदी अरब गणराज्य, श्रीलंका, अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, जापान, मॉरिशस, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों में हिंदी की माँग बढ़ती ही जा रही है। विदेशों में भी हिंदी की रचनाएँ लिखी जा रही हैं, जिसमें वहाँ के साहित्यकारों का भी विशेष योगदान है। ये हम सब के लिए गर्व की बात है कि विदेशों में भारतीयों से आपसी व्यवहार करने के लिए वहाँ के लोग भी हिंदी सीख रहे हैं। इस तरह हिंदी की माँग आज विश्वभर में

SCERT TELANGANA

बढ़ती ही जा रही है। इसलिए भारत के अलावा अन्य देशों में भी कई संस्थाएँ हिंदी के प्रचार व प्रसार में जुटी हुई हैं। जिनमें केंद्रीय हिंदी संस्थान हिंदी शिक्षण प्रशिक्षण कार्यों से देश विदेश में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। आज विश्व भर में क़रीब डेढ़ सौ से अधिक विश्वविद्यालय हिंदी संबंधी कोर्सों का संचालन कर रहे हैं। बैंक, मीडिया, फिल्म उद्योग आदि क्षेत्रों में हिंदी की उपयोगिता दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही है। इस तरह आज हिंदी नए-नए रोज़गारों का प्रमुख आधार बन चुकी है। हिंदी से अपने भविष्य का निर्माण करने वालों के लिए www.rajbhasha.nic.in,www.ildc.gov.in, www.bhashaindia.com,www.ssc.nic.in, www.parliamentofindia.nic.in,www.ibps.in,www.khsindia.org, www.hindinideshalaya.nic.in आदि वेबसाइट सेवा में तत्पर हैं। यह हमारे लिए गर्व की बात है कि सारा विश्व हिंदी का महत्व जान चुका है इसका प्रमाण यह है कि सारे विश्व में 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। इस तरह हिंदी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शोभित है।

हाँ, तुमने आगे की पढ़ाई के लिए द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी विषय का चयन करने की सलाह पूछी थी। हम जान चुके हैं कि आज राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का महत्वपूर्ण स्थान है। हम इससे अपने उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। इसलिए आगे की पढ़ाई के लिए प्रथम भाषा हो या द्वितीय भाषा, हिंदी का चयन करना ही लाभदायक है। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम हिंदी से जुड़कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने देश का नाम रोशन करोगे।

घर में बड़ों को मेरा प्रणाम कहना। अपने स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखना।

तुम्हारा प्रिय मित्र,
बशीर अहमद

पता :
श्री एस. अभिनव कुमार,
दसवीं कक्षा,
ए.पी. मॉडल स्कूल, वेलदंडा,
महबूबनगर - 509360.

प्रश्न

1. भारत देश को स्वतंत्र कराने में हिंदी भाषा का क्या योगदान रहा होगा?
2. हिंदी भाषा की क्या विशेषता है?
3. हिंदी भाषा सीखने से क्या-क्या लाभ हैं?

SCERT TELANGANA

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'हिंदी विश्वभाषा है।' इस कथन के बारे में अपने विचार व्यक्त कीजिए।
2. 'भारत में अनेकता में एकता का प्रतीक हिंदी है।' कैसे?

(आ) पाठ के आधार पर निम्न प्रश्नों के उत्तर हाँ या नहीं में दीजिए।

1. हिंदी देश को एकता के सूत्र में बाँधती है। ( )
2. 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। ( )
3. 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। ( )
4. हिंदी भाषा से रोज़गार की संभावनाएँ नहीं हैं। ( )

(इ) नीचे दिए गए वाक्य पाठ के आधार पर उचित क्रम में लिखिए।

1. भारतीय हिंदी शाब्दिक अर्थ भी कहलाती है से अपने
2. हिंदी 14 सितंबर मनाते हैं को दिवस
3. तरह इस हिंदी अंतर्राष्ट्रीय पर शोभित है स्तर
4. स्वास्थ्य ध्यान पूरा रखना का अपने

(ई) नीचे दिया गया विज्ञापन पढ़िए। प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

भारतीय स्टेट बैंक

विज्ञापन क्र.सं.सीआरपी.डी./एससीओ/2013-14/01
भारतीय स्टेट बैंक में राजभाषा अधिकारियों की भर्ती

भारतीय स्टेट बैंक में राजभाषा अधिकारियों की (सहायक प्रबंधक - राजभाषा) भर्ती के लिए भारतीय नागरिकों से आवेदन आमंत्रित किये जाते हैं। योग्य आवेदक आवेदन करने के लिए हमारी वेबसाइट http://www.statebankofindia.com अथवा http://www.sbi.co.in पर जाकर अन्य विवरण प्राप्त कर सकते हैं। आवेदक शुल्क भेजने से पूर्व विज्ञापन में दिया गया विवरण पूरी तरह से पढ़ लें।

आवेदन आरंभ हो रहे हैं : 25.05.2013
पंजीकरण की अंतिम तिथि : 13.07.2013

स्थान : मुंबई
दिनांक : 10.05.2013

1. यह विज्ञापन किस बैंक का है?
2. किस नौकरी के लिए यह विज्ञापन दिया गया है?
3. आवेदन करने से पहले वेबसाइट से अन्य जानकारी प्राप्त करने के लिए क्यों कहा गया होगा?

SCERT TELANGANA

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

1. सांस्कृतिक दृष्टि से हिंदी का क्या महत्व है?
2. हिंदी देश को जोड़ने वाली कड़ी है। इसे अपने शब्दों में सिद्ध कीजिए।

(आ) राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से हिंदी महत्वपूर्ण भाषा है। इस पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

(इ) 'हिंदी भाषा' पर एक छोटा सा निबंध लिखिए।

(ई) मनोरंजन की दुनिया में हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालिए।

भाषा की बात

(अ) कोष्ठक में दी गई सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. भाषा, समाधान, संकल्प (पर्याय शब्द लिखिए।)
2. एकता, स्वदेश, प्राचीन (विलोम शब्द लिखिए।)
3. परीक्षा, संस्था, दिशा (वचन बदलिए।)

(आ) सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. सकुशल, अनुक्रम, अनुचित (उपसर्ग पहचानिए।)
2. वार्षिक, खुशी, भारतीय (प्रत्यय पहचानिए।)
3. देश को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए एक भाषा की आवश्यकता हुई। (कारक पहचानिए।)

(इ) सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. सलाह, सरकार, संविधान, संस्कृति, समाधान (लिंग की पहचान कीजिए।)
2. जो विश्व के सभी देशों से जुड़ा हो। (एक शब्द में लिखिए।)
3. अद्‌वितीय (अनेक शब्दों में लिखिए।)

(ई) नीचे दिए गए वाक्य रचना की दृष्टि से समझिए और पहचानिए।

1. मुझे पूरा विश्वास है कि तुम हिंदी से अपना भविष्य बनाओगे । (संयुक्त वाक्य/मिश्रित वाक्य)
2. जो जानकारी दी गई है उसे समझिए। (संयुक्त वाक्य/मिश्रित वाक्य)
3. तुमने पूछा कि हिंदी का क्या महत्व है? (संयुक्त वाक्य/मिश्रित वाक्य)

परियोजना कार्य

इस पुस्तक के पहले पाठ से पाँचवें पाठ तक आए चित्रों में अपने मनपसंद चित्र का चयन कीजिए और उसके बारे में पाँच वाक्य लिखिए। उसका प्रदर्शन कक्षा में कीजिए।

SCERT TELANGANA

उपवाचक

हम सब एक हैं

अमेरिका के विश्व प्रसिद्ध कोलंबिया विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार पर जाते ही अंदर की ओर एक महान पुरुष का चित्र दिखाई देता है। चित्र के पास कुछ इस तरह लिखा है, ''हमें गर्व है कि ऐसा छात्र हमारे विश्वविद्यालय में पढ़कर गया है।''

कोलंबिया विश्वविद्यालय के **300** वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में 'सबसे आदर्श छात्र कौन है?' इसका सर्वेक्षण किया गया। तब **6** छात्रों के नाम सामने आए। उनमें प्रथम स्थान पर था एक ऐसे छात्र का नाम जो केवल कोलंबिया विश्वविद्यालय में ही नहीं बल्कि विश्वभर में समता-ममता, सहृदयता और मानवता का प्रतीक बन गया था।

जानते हो, वे कौन थे? वे कोई और नहीं भारतीय संविधान के निर्माता, दलितों के मसीहा, मानवता से पूरित महामहिम भारतरत्न डॉ. भीमराव रामजी अंबेड्कर थे। आपका जीवन हम सबके लिए प्रेरणा दायक है।

बात उन दिनों की है जब बालक अंबेड्कर अपनी प्राथमिक शिक्षा पूरी कर माध्यमिक शिक्षा के लिए हाई स्कूल में दाखिल हुए। एक दिन आप अपने भाई के साथ जा रहे थे। रास्ते में प्यास लगी। एक घर के पास गए और पानी माँगा। उस घर के मालिक ने कहा, ''तुम अछूत हो। हम तुमको पानी नहीं पिला सकते।'' उसने अपने घरवालों को भी पानी देने से मना कर दिया और दरवाज़ा बंद कर लिया। दरवाज़े के बंद होते ही अंबेड्कर को वह मार्ग मिल गया जहाँ अस्पृश्यता

SCERT TELANGANA

और असमानता मिटाकर एक नव समाज की प्रतिष्ठापना कर सकते हैं।

20 वीं शताब्दी के श्रेष्ठ चिंतक, ओजस्वी लेखक तथा यशस्वी वक्ता एवं स्वतंत्र भारत के प्रथम विधि मंत्री डॉ. भीमराव रामजी अंबेड्कर का जन्म 14 अप्रैल, 1891 को महाराष्ट्र प्रांत के रत्नगिरि जिले के अंबेवाड़ा गाँव में हुआ। आपकी माता भीमाबाई और पिता रामजी मालोजी सक्पाल थे।

आप सन् 1912 में बी. ए. पास हुए। वडोदरा महाराज श्री सयाजी राव गैक्वाड आपकी प्रतिभा से प्रभावित हुए। उन्होंने इन्हें उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका भेजा। वहाँ से वाणिज्यशास्त्र में एम. ए. पास हुए। इसके बाद सन् 1917 में 'भारत का राष्ट्रीय लाभ' विषय पर पीएच.डी. की उपाधि से सम्मानित हुए।

डॉ. अंबेड्कर उच्च शिक्षा पूरी कर भारत लौट आए। यहाँ वडोदरा महाराज के सैनिक सचिव पद पर नियुक्त हुए। बाद में मुंबई जाकर सीडेनहोम कॉलेज में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर नियुक्त हुए। किंतु कुछ लोगों की संकीर्ण विचारधारा से दुखी होकर नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। इतना होने पर भी आपका आत्मबल कभी कम नहीं हुआ। आपका दृढ़ विश्वास था, 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।' सन् 1919 में लंदन जाकर अपने अथक परिश्रम से एम.एससी., डी.एससी. और बैरिस्ट्री की उपाधि प्राप्त की।

सन् 1923 में मुंबई के उच्च न्यायालय में आपने वकालत शुरू कर दी। अनेक कठिनाइयों के बावजूद आप आगे बढ़ते गए। एक मुक़दमे में आपने अपने ठोस तर्कों से एक निर्दोष अभियुक्त को फाँसी की सज़ा से मुक्त करा दिया। इसके बाद वकालात की दुनिया में भी आपके चार चाँद लग गए।

आगे चलकर आप राजनीति की दुनिया में प्रविष्ट हुए। 8 अगस्त, 1930 में एक शोषित वर्ग के सम्मेलन के दौरान आपने भाषण देते हुए कहा, ''हमें अपना

रास्ता स्वयं बनाना होगा और स्वयं राजनीतिक शक्ति बने बिना शोषितों का निवारण नहीं हो सकता। उनका उद्धार समाज में उचित स्थान पाने में निहित है।'' ऐसे विचार आगे बढ़ाने के लिए आपने सन् **1920** में 'मूक नायक' नामक पत्रिका भी निकाली। सन् **1932** में लंदन में आयोजित गोलमेज सम्मेलन में भी भाग लिया।

सन् **1947** में भारत स्वतंत्र हुआ। स्वतंत्र भारत के संविधान की रचना के लिए बनी समिति के आप अध्यक्ष चुने गए। भारत के प्रथम विधिमंत्री भी नियुक्त हुए। आपने संविधान में दलितों, पीड़ितों और निम्न वर्गों के हित के लिए अनेक विधियों की रचना में विशेष भूमिका निभा कर सभी को समान रूप से न्याय दिलाने के अनुकूल संविधान का निर्माण किया।

डॉ. अंबेड्कर मेधावी, न्यायशास्त्र के पारंगत, समाज सुधारक, सहृदयी और समता-ममता से पूरित मानवतावादी थे। आपने अनेक ग्रंथों की रचना की। आपका विश्वास है कि जात-पाँत रहित सम-समाज से ही देश में सुख-शांति की स्थापना हो सकती है। ऐसे महामहिम का निधन **6** दिसंबर, **1956** को हुआ। इनके विचार समय के बीतने के साथ और महत्वपूर्ण बनते गए। ये विचार तत्कालीन, वर्तमान और भावी समाज के लिए महत्वपूर्ण हैं। ऐसे सपूतों पर भारत को गर्व है।

प्रश्न :

1. 'हम सब एक हैं' शीर्षक पर अपने विचार लिखिए।
2. डॉ. अंबेड्कर को संविधान निर्माता क्यों कहा जाता है?
3. 'डॉ. अंबेड्कर मानवीय दृष्टिकोण का सुंदर उदाहरण हैं।' सिद्ध करें।

विचार-विमर्श

जब आपको कोई चिढ़ाता है या ताने कसता है, तब आप कैसा महसूस करते हैं?

SCERT TELANGANA